अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्रीमती नलिनी विलास पवार का एम्.फिल्.हिन्दी का लघु-प्रबंध - **"विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटक"** परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

डॉ.गजानन शंकर सुर्वे
हिन्दी विभागाध्यक्ष
डॉ. गजानन सुर्वे एम. ए. पीएच. डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा-४१५ ००२

प्राचार्य पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री
महाविद्यालय, सातारा

डॉ॰गजानन शंकर सुर्वे
एम्॰ए॰,पीएच्॰डी॰
रीडर एवं अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा - 415 002 (महाराष्ट्र)

स्नातकोत्तर अध्यापक, हिन्दी
शोध-निर्देशक, हिन्दी
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापूर

191-बी गुरुवार पेठ
दोशी बिल्डिंग
सातारा - 415 002
(महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ॰ गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, - प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती नलिनी विलास पवार ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्॰फिल्॰ हिन्दी उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध - "विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटक" मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्रीमती नलिनी पवार के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

सा ता रा
29 जून 1995॰

डॉ॰गजानन शंकर सुर्वे
शोध-निर्देशक के हस्ताक्षर

प्र स्था प न

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटक

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्· हिन्दी के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा
जून 1995

श्रीमती नलिनी विलास पवार
शोध-छात्रा के हस्ताक्षर

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटक

प्रा क्क थ न

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में विष्णु प्रभाकर का महत्वपूर्ण स्थान है। वे मनोविज्ञान के पारखी हैं, उनके साहित्य में मनोविज्ञान के कुछ पहलू कम-अधिक मात्रा में मात्रा में दिखायी पडते हैं। उनका नाटक साहित्य भी इससे अलग नहीं है। मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में आलोचकों ने उनके तीन नाटकों - "डॉक्टर", "टगर" और "बन्दिनी" को मनोवैज्ञानिक नाटक माना है। लघुशोध-प्रबंध की सीमा को परिलक्षित करते हुए यहाँ उनके उपर्युक्त तीन नाटकों का मनोवैज्ञानिक विवेचन-विश्लेषण करना ही हमारा प्रमुख उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध छः अध्यायों में विभाजित है -

अध्याय : 1

प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक **"विषय-प्रवेश"** है, जिसके अंतर्गत नाटक एक विशिष्ट साहित्य विधा में - कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, नाटक का उद्देश्य आदि तथ्यों का विवेचन है। मनोविज्ञान और अन्य ज्ञान-विज्ञान, मनोविज्ञान का अर्थबोध, परिभाषा, मनोविज्ञान की शाखाएँ, मन के गत्यात्मक पहलू, मानव की मूल प्रवृत्तियाँ, मनोभावों या मनोविकारों, मनोविकृतियों के प्रकार, मनोरचनाएँ, चरित्र-विकृतियाँ, मानव का व्यक्तित्व, खण्डित व्यक्तित्व, तथा विष्णु प्रभाकर के नाटकों की अवधारणा, विष्णु प्रभाकरजी का जीवन वृत्त, बचपन, विवाह, शिक्षा, उनकी व्यक्तित्व, विष्णु प्रभाकर की साहित्य साधना , उनके नाटक आदि बातों का विवेचन विश्लेषण किया गया है।

अध्याय : 2

प्रस्तुत अध्याय **"विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में विभिन्न मनोविकार"** के नाम से अभिहित है, जिसमें प्रेम मनोविकार के अंतर्गत - डॉ॰अनीला के प्रति, नाटक के अन्य पात्रों का प्रेम, सतीशचन्द्र शर्मा का अपने बीवी और बच्चों के प्रति प्रेम, पति-पत्नी प्रेम, जेठानी-देवरानी प्रेम, छद्म प्रेम, राष्ट्र प्रेम, प्रकृति प्रेम आदि प्रेम मनोविकार की अवस्थाओं का वर्णन किया गया है। अन्य मनोविकारों में वात्सल्य, उत्साह, हँसी, लज्जा या ग्लानि, स्वप्न, भय और चिन्ता, भ्रान्ति, ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, जड़ता आदि विकारों का विवेचन भी किया गया है।

अध्याय : 3

प्रस्तुत अध्याय **"विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में मनोविकृतियाँ और रक्षायुक्तियाँ"** नाम से अभिहित है। इस अध्याय में सामान्य मनोविज्ञान की व्याप्ति, अर्थबोध, सामान्य व्यक्ति की विशेषताएँ, असामान्य व्यक्ति की विशेषताएँ, मनःस्नायुविकृतियों में चिन्ता मनःस्नायुविकृति, युध्द मनःस्नायुविकृति, मनःभ्रान्ति। कार्यपरक विकृतियों में मनोविदलता, उत्साह-विषाद, व्यामोह तथा यौन-विकृतियों का समावेश किया गया है। मनोरचनाओं या रक्षायुक्तियों के अंतर्गत दमन, शमन, उदात्तीकरण, स्थानान्तरण, प्रक्षेपण या आरोपण, युक्तिकरण, क्षतिपूर्ति आदि मनोरचनाओं का विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

अध्याय : 4

प्रस्तुत अध्याय **"विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में चरित्र-विकृतियाँ और खण्डित व्यक्तित्व"** के नाम से अभिहित है। प्रस्तुत अध्याय में चरित्र-विकृतियों "डॉक्टर" नाटक की नीरू, "टगर" नाटक की टगर तथा "टगर" नाटक के माथुर का समावेश किया गया है। खण्डित व्यक्तित्व में डॉ॰अनीला, टगर तथा उमा इन पात्रों का समावेश किया गया है। अन्य पात्रों में "बन्दिनी" नाटक के सावित्री, सुरेन्द्र, कालीनाथ राय इन पात्रों का समावेश किया गया है।

अध्याय : 5

प्रस्तुत अध्याय "**विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में शिल्पता और मंचीयता**" के नाम से अभिहित है। इस अध्याय में शिल्पता के अंतर्गत शब्द सौष्ठव में मनोविकार और मनोविकृति दर्शक शब्दावली, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, संस्कृत, व्यावसायिक शब्दावली तथा पत्रात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली का उल्लेख है। संवाद में मनोभावाभिव्यंजक शब्द, संवाद मे संवाद, लघु संवाद, खण्डित संवाद विवेचित हैं। गीत योजना में नाविक गीत, स्त्रोत्र पाठ, आरती और मंचीयता में मंच सज्जा, वेशभूषा, अभिनेयता, ध्वनि प्रकाश योजना, इसके अलावा दर्शकीय, पाठकीय और लेखकीय प्रतिक्रियाओं का समावेश किया गया है।

अध्याय : 6

प्रस्तुत अध्याय "**समन्वित मूल्यांकन**" नाम से अभिहित है। इस अध्याय में शोध-प्रबंध का सार तथं विवेच्य नाटकों का मूल्यांकन निरूपित किया गया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध वन्दनीय गुरूवर डॉ.गजानन शंकर सुर्वे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा महाराष्ट्र, के आत्मीय निर्देशन में लिखा गया है। सही अर्थों में वे मेरे गुरू हैं जिनके सुयोग्य मार्गदर्शन में प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध पूर्ण हो सका है। अपने अन्य शैक्षिक कार्य में व्यस्त होने के बावजूद उन्होने जिस आत्मीयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है, जो शब्दों में व्यक्त करना कठिन ही है। मेरे शोध-प्रबंध का सम्पूर्ण श्रेय उन्हीं के आशीर्वचन का प्रतिफल है। उन्हीं के निजी ग्रंथालय से मैने शोध-प्रबंध के लिए नाटकों और संदर्भग्रंथों का उपयोग किया है। अतः सर्वप्रथम उनके सामने श्रध्दाभाव के साथं नतमस्तक होना मेरा पहला कर्तव्य बनता है।

प्रस्तुत शोध-कार्य में जिन्होंने मुझे कठिन प्रसंगों में बातों से धीरज दिया वह वात्सल्य मूर्ति गुरूपत्नी श्रीमती देवलता सुर्वे, गुरूकन्या कामायनी सुर्वे,

प्रा·श्रीमती रूक्साना शेख, प्रा·जयवंत जाधव, हमारे कॉलेज के अवकाश प्राप्त प्राचार्य अमरसिंह राणे, प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ, शिवाजी विश्वविद्यालय के रीडर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ·पी·एस्·पाटील और डॉ·अर्जुन चव्हाण के सहयोग के लिए भी मैं आभारी हूँ। तथा मैं जहाँ, जिस कॉलेज में कार्य कर रही हूँ उस कॉलेज के संस्थापक श्री·साहेबराव पवार, अध्यक्ष सुधीर पवार जिन्होंने मेरा यह शोध-कार्य पूरा करने के लिए प्रेरणा दी, उन सबकी मैं शुक्रगुजार हूँ।

इसके अतिरिक्त मेरे अध्यात्म के गुरू परमपुज्य धुंदी बाबा उनका भी मैं आधार मानना चाहूंगी। मेरे पूज्य पिताजी श्री·कृष्णराव भाऊसाहेब जाधव जिन्होंने बहुत पीड़ा सहकर मुझे पढ़ाया, मेरी माँ श्रीमती विजया, भाई सुहास और श्रीनिवास उन सबके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। मेरे पति श्री·विलास पवार जिनके सहयोग के बिना मैं यह कार्य पूरा कर ही नहीं सकती। मेरे ससूर स्वर्गीय किसन पवार जो पढ़े-लिखे न होकर भी मेरी पढ़ाई में दिलचस्पी लेते रहे, मेरे देवर श्री·वसंत पवार जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया। मेरी दो बेटियाँ जो अभी छोटी होकर भी समझदार हैं - गीतांजली और शिवांजली उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

हमारे फॅमिली डॉक्टर श्री·थत्ते, मेरी सहेली श्रीमती सीमा परांजपे, कु·रेश्मा सय्यद, माधुरी पार्टे आदि की भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया है।

इस प्रबंध लेखन के लिए मैंने नाटककार श्री विष्णु प्रभाकर के जिन पुस्तकों का उपयोग किया है, तथा जिन संदर्भ-ग्रंथों का मैने उपयोग किया है उन सभी सन्दर्भ ग्रंथो के लेखकों की मे आभारी हूँ। जिन्होने बडी आत्मीयता और तत्परता से प्रबंध का टंकण लेखन का कार्य किया उन सहयोगी श्री·मुकुंद ढवले, श्री·सुशीलकुमार कांबळे आदि सभी महानुभावों की मैं आभारी हूँ। उन सबको मैं कैसे भूल सकती हूँ ? उनकी कृतज्ञता में रहना ही मेरा परम कर्तव्य बनता है।

श्रीमती नलिनी विलास पवार

शोध-छात्रा

मु·पो·मेढा

ता·जावली,

जि·सातारा - 415 012

महाराष्ट्र

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटक

अ नु क्र म णि का

पृष्ठांक

अध्याय : 1

विषय-प्रवेश 001 - 048

भूमिका

नाटक एक विशिष्ट साहित्य विधा

कथावस्तु, पात्र, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन,
देश-काल तथा वातावरण, उद्देश्य, अभिनय,
रंगमंच, दर्शक।

मनोविज्ञान और अन्य ज्ञान-विज्ञान

1. मनोविज्ञान और जीव-विज्ञान।
2. मनोविज्ञान और शरीर-विज्ञान।
3. मनोविज्ञान और समाज-विज्ञान।

मनोविज्ञान : अर्थबोध तथा परिभाषा

मनोविज्ञान की दो प्रमुख शाखाएँ

1. सामान्य मनोविज्ञान।
2. असामान्य मनोविज्ञान।

मन के गत्यात्मक पहलू

1. फ्रायड़ का मनोविश्लेषण।
2. एडलर का मनोविश्लेषण।
3. युंग का मनोविश्लेषण।

पृष्ठांक

मानव की मूल प्रवृत्तियाँ

मनोभाव

मनोविकार और मनोविकृति में अंतर

मनोविकृति के प्रकार

1· मनःस्नायुविकृति।

2· कार्यपरक विकृति।

3· योन विकृति।

मनोरचनाएँ या रक्षायुक्तियाँ

चरित्र-विकृति

व्यक्तित्व

खण्डित व्यक्तित्व

विष्णु प्रभाकर के नाटकों की अवधारणा

जन्म तथा बचपन, शिक्षा, विवाह, व्यक्तित्व,

प्रभाकर नाम का सिलसिला।

विष्णु प्रभाकर की साहित्य साधना

अ· नाटकेतर साहित्यकार के रूप में

1· कहानीकार के रूप में।

2· उपन्यासकार के रूप में।

3· जीवनीकार के रूप में।

4· यात्रावृत्त के रूप में।

5· बाल साहित्यकार के रूप में।

6· एकांकीकार के रूप में।

आ· नाटककार के रूप में

1· ऐतिहासिक नाटक।

2· सामाजिक नाटक।

3· राजनीतिक नाटक।

4· मनोवैज्ञानिक नाटक।

5· रूपान्तरित नाटक।

पृष्ठांक

मान-सम्मान।

अध्ययन-प्रणाली।

निष्कर्ष।

संदर्भ

अध्याय : 2

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में विभिन्न मनोविकार 049 - 102

भूमिका

प्रेम

1· डॉ·अनीला के प्रति।

2· बीबी और बच्चों के प्रति।

3· पत्नी का पति के प्रति।

4· पति-पत्नी प्रेम।

5· जेठानी-देवरानी प्रेम।

6· छद्म प्रेम।

7· राष्ट्र प्रेम

8· प्रकृति प्रेम।

वात्सल्य

उत्साह

1· अस्पताल के प्रति।

2· अधिकार के प्रति।

3· जासूसी के प्रति।

4· उत्सव के प्रति।

पृष्ठांक

हँसी

1· मनोविनोदपूर्ण हँसी।

2· उपहासात्मक हँसी।

3· प्रेम मूलक हँसी।

लज्जा या ग्लानि

स्वप्न

1· दिवास्वप्न।

2· कर्तव्यपूर्ति का स्वप्न।

भय और चिन्ता

भ्रान्ति

ईर्ष्या

घृणा

क्रोध

जड़ता

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय : 3

विष्णु प्रभाकर के मनोविज्ञानिक नाटकों में

मनोविकृतियाँ और रक्षायुक्तियाँ 103 - 143

भूमिका

सामान्य मनोविज्ञान : व्याप्ती, अर्थबोध

सामान्य व्यक्ति की विशेषताएँ।

असामान्य व्यक्ति की विशेषताएँ।

पृष्ठांक

मनःस्नायुविकृतियाँ

चिन्ता मनःस्नायुविकृति

युध्द मनःस्नायुविकृति

मनःभ्रान्ति।

कार्यपरक विकृतियाँ

मनोविदलता

उत्साह-विषाद

व्यामोह या संभ्रान्ति

यौन-विकृतियाँ

प्रदर्शन प्रवृत्ति, मुक्त सहवासिता।

मनोरचनाएँ या रक्षायुक्तियाँ

दमन, शमन, उदात्तीकरण, स्थानांतरण

प्रक्षेपण या आरोपण, युक्तिकरण, क्षतिपूर्ति।

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय : 4

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में
चरित्र-विकृतियाँ और खण्डित व्यक्तित्व 144 - 161

भूमिका

चरित्र-विकृतियाँ

1· नीरू डाक्टर

2· ठाकुर टगर

3· माथुर टगर

पृष्ठांक

खण्डित व्यक्तित्व

1· डॉ·अनीला डॉक्टर

2· टगर टगर

3· उमा बन्दिनी

अन्य पात्र

1· सावित्री बन्दिनी

2· सुरेन्द्र बन्दिनी

3· कालीनाथ बन्दिनी

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय : 5

विष्णु प्रभाकर के मनोवैज्ञानिक नाटकों में

शिल्पता और मंचीयता 162 - 205

भूमिका

शिल्पता

शब्दसौष्ठव

मनोविकार और मनोविकृति दर्शक शब्दावली।

अंग्रेजी शब्दों की शब्दावली।

अरबी शब्दावली।

फारसी शब्दावली।

हिन्दी शब्दावली।

संस्कृत शब्दावली।

व्यावसायिक शब्दावली।

अन्य व्यावहारिक शब्दावली।

कहावते और मुहावरे।

पृष्ठांक

पत्रात्मक शैली का प्रयोग।

पूर्वदीप्ति शैली

संवाद

- मनोभावाभिव्यंजक संवाद।
- संवाद में संवाद।
- लघुसंवाद।
- खण्डित संवाद।

गीत योजना

- नाविक गीत।
- स्त्रोत्र पाठ।
- आरती।

रंगमंचीयता

- मंचसज्जा।

वेशभूषा

अभिनेयता

ध्वनिप्रकाश योजना

दर्शकीय, पाठकीय और लेखकीय प्रतिक्रियाएँ।

निष्कर्ष

संदर्भ

अध्याय : 6

समन्वित मूल्यांकन 206 - 209

संदर्भ ग्रंथ सूची 210 - 213